७९. व्यवस्था, आचरण का योग

सार्वभौमता विधि से व्यवस्था, अखण्डता विधि से आचरण, व्यवस्था और आचरण के योग से मानव

२०-०६-२०१३

सार्वभौमता विधि से व्यवस्था

चारों अवस्था अपने आचरण के रूप में नियम, नियंत्रण, संतुलन विधि से जी पाता है | नियम आचरण के रूप में होता है | नियमपूर्वक आचरण बनाए रखने से आचरण होता है | फलतः संतुलन होता है | संतुलन का स्वरूप चारों अवस्था में एक सा ही है आचरण के रूप में | आचरण ही प्रमाण है | अभी तक मानव अपने आचरण को पहचाना नहीं है | बाकी अवस्था के आचरण में विशवास रखता है | धान को लगाता है, समय पर काटने पर विश्वास रखता है | इस प्रकार बिही लगाता है, बिही समय पर पकता है, इस पर विश्वास रखता है | आम लगाता है, समय पर पकता है, इस पर विश्वास रखता है | इसी प्रकार सभी प्रकार की प्राणावस्था की वस्तुओं पर विश्वास रखता है | पदार्थावस्था में मृद् , पाषाण, मणि, धातु के रूप में विश्वास रखता है | यही उसका आचरण है | पदार्थावस्था का आचरण यही है- मृद् , पाषाण, मणि, धातु | इसी प्रकार से सभी जानवरों के साथ विश्वास रखता है | गाय के आचरण पर विश्वास रखता है | बाघ के आचरण पर विश्वास रखता है | बकरी, भेड़, मच्छर, मक्खी इन सब पर विश्वास रखता है | इनके साथ कैसा जीना है उसको भी तय करता है |

इसलिये इनको पालने में विश्वास रखता है | बाघ को भी पाला गया है | गाय को भी पाला गया है | इस प्रकार मानव मनुष्येतर प्रकृति के साथ विश्वास रखता है | मानव का मानव के साथ विश्वास नहीं है | युद्ध करने केलिये तैयार बैठे हैं | बाकी तीनों अवस्था के साथ उनके आचरण के साथ विश्वास रखता है | मानव अपने आचरण पर विश्वास रखना आवश्यक है | मानव का आचरण अभी तक ध्रुवीकरण नहीं हुआ है | अनेक जातियां, अनेक मत, अनेक समुदायों के रूप में पहचाना गया है | यह परस्पर विरोधी हैं | विरोध का मतलब में युद्ध करने का तैयारी | एक सौ से अधिक युद्ध हो चुके हैं | एक सौ से अधिक संविधान बना है | एक दूसरे के परस्परता में अनबन बना रहा है | अभी-अभी ग्लोबल हार्मनी, ग्लोबल सिटिजन के नाम से संस्थाएं बनी हैं | ये दोनों संस्थाएं युद्ध-मुक्त, भ्रम-मुक्त, अपराध-मुक्त को पहचानना शेष है | इसे अच्छी तरह से देखा है, समझा है | यह दोनों संस्था को समझना बहुत आवश्यक है |

अभी तीसरी संस्था U.N.O. समझना शेष है | U.N.O. के पास मशीनरी है | इनके पास अपेक्षा है, ये दोनों संस्था के पास | अपेक्षा मात्र से काम नहीं होता, अभी तक काम नहीं हुआ | सद्बुद्धि की अपेक्षा बना हुआ है | इसको हर व्यक्ति परीक्षण कर सकता है | हर देश में कर सकता है | हर समय में कर सकता है | हर स्थान में कर सकता है | इसी क्रम में नियम को पा सकता है | मानव का मानव चेतना ही मानव के लिये नियम है | अथवा दूसरे भाषा से विकसित चेतना ही मानव के लिये नियम है | विकसित चेतना पूर्वक आचरण करने से क्या होता है, इसको लिखा है | इस प्रकार अनुभव सम्मत व्यवहारमूलक विधि से, विचारमूलक विधि से, अनुभवमूलक विधि से, मानव नियम को कैसा पालन करता है, उसे स्पष्ट किया है | यहाँ पुनः उसी बात को कहते हैं | नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक जीना बनता है | समाधान, समृद्धि ,अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक अनुभवमूलक विधि से जीना बनता है | स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार के रूप में जीना बनता है | यही

सभी अवस्था के लिये नियम है | मानव में मानवत्व, गाय में गायत्व, व्याघ्र में व्याघ्रत्व, बन्दर में बन्दरत्व ये स्वाभाविक रूप में बनी हुई है | इसको अच्छी तरह से समझना आवश्यक है | हर व्यक्ति को समझना आवश्यक है | यह नियम यदि पालन होता है, तब आगे की बात हो सकता है | आगे बात यही है कि अखण्डता विधि से आचरण, मानव परम्परा में सार्वभौमता विधि से व्यवस्था हो सकता है | यह मानव परम्परा में ही परिवर्तन की आवश्यकता है | बन्दर, भालू, झाड़, पत्थर में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है | मानव में परिवर्तन आदिकाल से आवश्यकता के रूप में बना हुआ है | जब तक मानव अपना नियम, नियंत्रण संतुलन को पहचानेगा नहीं तब तक | इसलिये विकल्प को रखा है |

विकसित चेतना में जीना सार्वभौमता, अखण्डता है | अखण्डतापूर्वक सम्पूर्ण अवस्थाओं में उत्सव मनाया जाता है अर्थात विकसित चेतना को अपनाने से उत्सव विधि बनता है | इसमें अक्षराभ्यास एक उत्सव है, जन्मदिन एक उत्सव है, व्यवस्था का उत्सव, ऋतुकाल का उत्सव, इस ढंग से नित्य उत्सव का विधि बनता है | यह अखण्ड समाज का आधार है | दस सोपानीय विधि से व्यवस्था होता है | यह परिवार व्यवस्था, परिवार समूह व्यवस्था १० परिवार के बीच में होना देखा गया है, समझा गया है | ग्राम परिवार व्यवस्था, ग्राम परिवार समूह व्यवस्था, क्षेत्र व्यवस्था, मण्डल व्यवस्था, मण्डल समूह व्यवस्था, मुख्य राज्य व्यवस्था, प्रधान राज्य व्यवस्था, विश्व राज्य व्यवस्था | इस ढंग से १० सोपान होता है | इन दसो सोपानो में जी पाना ही नियंत्रण है | नियम आचरण है | व्यवस्था नियंत्रण है | इस क्रम में मानव अपने को, सार्वभौमता को, अखण्डता को प्रमाणित करता है | स्वयं मानव प्रमाणित होना आवश्यक है | मानव अभी तक जीवों से अच्छा जीने का काम कर चुका है | इसमें सफल हो चुका है | इस क्रम में नियम, नियंत्रण, संतुलन, सार्वभौम व्यवस्था दोनों प्रमाणित होंगी | इसी का अध्ययन है विकल्प | अध्ययन विधिपूर्वक समझना हो सकता है | अभी तक इस प्रकार का कोई प्रयास धरती पर नहीं है | यह आवश्यकता बना हुआ है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- **ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)**